देश विदेश की लोक कथाऐं — एक कहानी कई रंग–9 ः

हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियॉ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Hansel Aur Gretel JaIsi Kahaniyan (Hansel and Gretel Like Stories)
Cover Page picture : A Boy
Published Under the Aiuspice of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियाँ 5
1 हैन्सैल और ग्रैटैल 7
2 चिक 26
3 थम्ब 36
4 छोटा पौसेट 58

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियों एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियॉ दी गयी हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"[1]। अब तक इस सीरीज़ में आठ पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं।

अब प्रस्तुत है इस सीरीज की नवीं पुस्तक — "हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियॉ"[2]। तुम लोगों ने हैन्सैल और ग्रैटैल की कहानी तो सुनी ही होगी जिसमें दो छोटे छोटे भाई बहिन घर में खाने की कमी की वजह से जंगल में छुड़वा दिये जाते हैं। फिर वहॉ से वे क्या क्या कारनामे करते हैं यही इस कहानी का विषय है।

यह कहानी मूल रूप से यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की एक बहुत ही लोकप्रिय और मशहूर कहानी है। यह कहानी वहॉ **1812** में प्रकाशित की गयी थी। ऐसी कहानी केवल जर्मनी में ही नहीं सुनी जाती बल्कि और देशों में भी कही सुनी जाती हैं और वे सब एक जैसी ही लगती हैं।। तो आओ पढ़ते हैं वैसी ही कुछ कहानियॉ और... इस "एक कहानी कई रंग" की नवीं कड़ी में।

ये सब कहानियॉ **5–6** साल तक के बच्चों के लिये बहुत अच्छी हैं। ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं भी तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी

[1] "One Story Many Colors-1" – Cat and Rat Like Stories

[2] "One Story Many Colors-15" – Crocodile and Monkey Like Stories

1 हैन्सैल और ग्रैटैल[3]

हैन्सैल और ग्रैटैल की कहानी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की एक बहुत ही लोकप्रिय और बहुत ही मशहूर कहानी है। हो सकता है कि तुमने भी यह कहानी किसी न किसी रूप में कही सुनी हो पर लो यहॉ पढ़ो वहॉ की इस मूल कहानी को अब हिन्दी में।

एक बहुत बड़े जंगल के पास एक बहुत ही गरीब लकड़हारा अपने दो बच्चों के साथ रहता था – एक बेटा हैन्सैल और एक बेटी ग्रैटैल। वह इतना गरीब था कि उसके पास खाने को भी पूरा नहीं पड़ता था।

एक बार बहुत बड़ा अकाल पड़ा। वह लकड़हारा बेचारा अपने बच्चों को रोज का दो वक्त का खाना भी नहीं खिला पा रहा था।

एक दिन जब वह अपने बिस्तर में लेटा हुआ था और अपनी चिन्ताओं में घिरा हुआ था कि उसने एक लम्बी सी सॉस ले कर अपनी पत्नी से कहा — "हम लोग क्या करें? जब हमारे अपने खाने के लिये कुछ नहीं है तो हम अपने बच्चों को कैसे खिलायें?"

पत्नी बोली — "प्रिय, मैं तुम्हें एक बात बताऊॅ? ऐसा करते हैं कि कल हम लोग दोनों बच्चों को जंगल के किसी सबसे घने हिस्से में

[3] Hansel and Gretel – a folktale from Germany by Brothers Grimm appeared in "Children's and Household Tales", 7th ed. 1857. Translated by DL Ashliman.
Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm015.html

ले जाते हैं। वहॉ हम उनके लिये आग जलायेंगे और उनको रोटी का एक एक छोटा सा टुकड़ा दे देंगे।

उनको वहीं अकेला छोड़ कर हम अपने काम पर चले जायेंगे और फिर लौट कर वहॉ नहीं आयेंगे। वहॉ से वे घर का रास्ता ढूँढ नहीं पायेंगे और इस तरह से हम उनसे छुटकारा पा जायेंगे।"

पति बोला — "नहीं प्रिये, मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं अपने ही हाथों से अपने ही बच्चों को जंगल में अकेला कैसे छोड़ सकता हूँ? तुरन्त ही वहॉ जंगली जानवर आ जायेंगे और उनको फाड़ कर खा जायेंगे। नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं उनको वहॉ अकेला नहीं छोड़ सकता।"

पत्नी फिर बोली — "तुम बेवकूफ हो, अगर हमने ऐसा नहीं किया तो हम चारों ही भूखे मरेंगे। अगर तुम इन बच्चों को जंगल में नहीं छोड़ सकते तो फिर तुम ऐसा करो कि फिर हम चारों के ताबूत[4] के लिये तख्ते बना लो।"

और फिर वह तब तक अपने पति के पीछे पड़ी रही जब तक कि वह इस बात के लिये राजी नहीं हो गया कि वह बच्चों को जंगल में छोड़ देगा।

पति बोला — "पर मुझे अपने बच्चों के लिये बहुत दुख होता है प्रिये।"

[4] Translated for the word "Coffin" – see its picture above.

"दुख तो मुझे भी होता है पर क्या करें?"

उनके दोनों बच्चे भी भूख की वजह से सो नहीं पाये थे। उन्होंने अपनी सौतेली मॉ की सारी बातें सुन ली थीं। ग्रैटैल तो यह सब सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ी और अपने भाई हैन्सैल से बोली — "भैया, अब हमारा यहॉ सब कुछ खत्म हो गया।"

भाई बोला — "चुप रह ग्रैटैल। तू चिन्ता न कर मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है। और रो मत मैं कुछ तरकीब निकालूँगा।"

जैसे ही उनके माता पिता सो गये तो हैन्सैल उठा, उसने अपनी जैकेट पहनी और बाहर निकल गया। चॉद खूब ज़ोर से चमक रहा था।

उसके घर के सामने पड़े सफेद पत्थर के टुकड़े उस चॉदनी में चॉदी के सिक्कों की तरह चमक रहे थे। हैन्सैल ने नीचे झुक कर वे पत्थर उठा कर उनसे अपनी जैकेट की जेबें भर लीं।

यह करके वह घर के अन्दर चला गया और अपनी बहिन से बोला — "तू बिल्कुल चिन्ता मत कर ग्रैटैल, आराम से सो। भगवान हमारा ख्याल जरूर रखेगा।" और वे दोनों सो गये

सुबह सवेरे दिन निकलने से पहले ही उनकी सौतेली मॉ उठ गयी और उसने दोनों बच्चों को जगाया — "अरे आलसियो उठो, चलो हम लोग जंगल से लकड़ियॉ लेने जा रहे हैं।"

फिर उसने उन दोनों को एक एक टुकड़ा डबल रोटी का दिया और बोली — "यह लो तुम्हारा दोपहर का खाना। इसको जल्दी से मत खा लेना क्योंकि फिर तुमको और नहीं मिलेगा।"

ग्रैटैल ने डबल रोटी के दोनों टुकड़े अपने एप्रन में रख लिये क्योंकि हैन्सैल की जेबें तो पहले से ही पत्थरों से भरी थीं। फिर वे सब लोग जंगल की तरफ चल दिये।

वे लोग थोड़ी ही दूर चले होंगे कि हैन्सैल ने रास्ते में बार बार रुकना शुरू कर दिया वह बार बार रुक कर पीछे अपने घर की तरफ देखता जाता था।

उसके पिता ने पूछा — "हैन्सैल, यह तुम रास्ते में बार बार रुक कर पीछे क्या देख रहे हो? ध्यान से चलो कहीं तुम ठोकर न खा जाओ।"

हैन्सैल बोला — "ओह पिता जी, मैं अपनी सफेद बिल्ली की तरफ देख रहा था जो हमारे घर की छत पर बैठी हमको विदा कहने की कोशिश कर रही है।"

मॉ बोली — "अरे बेवकूफ, वह तुम्हारी बिल्ली नहीं है वह तो चिमनी के ऊपर धूप चमक रही है।"

पर वास्तव में हैन्सैल भी कोई बिल्ली नहीं देख रहा था बल्कि वह तो अपनी जेब से निकाल कर एक एक पत्थर रास्ते में गिराता चला आ रहा था।

जब वे लोग बीच जंगल में पहॅुचे तो पिता ने कहा — "तुम लोग लकड़ियॉ इकट्ठी करो तब तक मैं आग जलाता हॅू ताकि तुम लोग ठंड में सिकुड़ो नहीं।"

सो हैन्सैल और ग्रैटैल दोनों ने इतनी सारी डंडियॉ इकट्ठी कर लीं कि उनका एक छोटा सा पहाड़ बन गया। उन डंडियों में आग लगा दी गयी।

जब उनमें से ठीक से लपट निकलने लगी तो मॉ बोली — "तुम लोग आग के पास लेट जाओ और आराम करो। हम लोग जंगल में अन्दर लकड़ियॉ काटने जाते हैं। जब हमारा काम खत्म हो जायेगा तब हम तुमको आ कर ले जायेंगे।"

और वे लकड़ी काटने चले गये। और हैन्सैल और ग्रैटैल दोनों उस आग के पास बैठ गये। दोपहर हुई तो दोनों ने अपनी अपनी डबल रोटी खा ली।

उस समय क्योंकि वे लोग कुल्हाड़ी चलने की आवाज सुन पा रहे थे तो उनको लगा कि उनके माता पिता वहीं पास में ही कहीं हैं और लकड़ी काट रहे हैं।

पर वह कुल्हाड़ी नहीं थी जो ऐसी आवाज कर रही थी। उनके पिता ने एक लकड़ी एक सूखे पेड़ में बॉध दी थी जो हवा से हिल हिल कर पेड़ को बार बार मार रही थी। यह आवाज उसी की थी।

काफी देर बैठे बैठे बच्चों को ऊँघ आने लगी और वे वहीं लेट गये और सो गये। जब वे सो कर उठे तो रात हो गयी थी और हवा भी बहुत ज़ोर से चल रही थी।

ग्रैटैल तो रोने लगी और बोली — "भैया अब हम घर कैसे जायेंगे?"

हैन्सैल ने उसको तसल्ली दी — "थोड़ा इन्तजार कर ग्रैटैल। ज़रा चॉद को निकल आने दे तब हम रास्ता ढूँढ लेंगे।"

कुछ देर में चॉद निकल आया तो हैन्सैल ने अपनी छोटी बहिन का हाथ पकड़ा और सुबह जो वह सफेद पत्थर रास्ते में गिराता हुआ आया था उनको ढूँढता ढूँढता चल दिया। वे सफेद पत्थर चॉदनी रात में चॉदी के सिक्कों की तरह से चमक रहे थे।

उन पत्थरों के सहारे सहारे वे रात भर चलते रहे और सुबह होने तक घर पहुँच गये। जा कर उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया तो मॉ ने दरवाजा खोला। उसने देखा कि वहॉ तो हैन्सैल और ग्रैटैल खड़े थे। बच्चों को वापस आया देख कर तो वह आश्चर्य में पड़ गयी।

वह चिल्ला कर बोली — "ओ बच्चो, तुम वहॉ जंगल में इतनी देर तक क्यों सोते रहे? हमको लगा कि तुम जंगल से वापस लौटना ही नहीं चाहते।"

पर पिता ने जैसे ही अपने बच्चों को देखा तो वह उनको देख कर बहुत खुश हो गया क्योंकि वह तो अपने बच्चों को जंगल में अकेले छोड़ना ही नहीं चाहता था।

पर कुछ दिनों के बाद घर में फिर कुछ ऐसा होने लगा कि मॉ को लगा कि बच्चों को फिर से जंगल में छोड़ देना चाहिये।

एक दिन बच्चों ने मॉ को फिर से पिता से यह कहते सुना — "हमारे पास जो कुछ भी था अब वह फिर से खत्म हो गया है। अब हमारे पास केवल आधी डबल रोटी बची है और बस।

हमको बच्चों को फिर से छोड़ देना चाहिये। इस बार हम उनको जंगल में और दूर ले जायेंगे ताकि उनको घर वापस आने का रास्ता ही न मिल सके। नहीं तो हमारे पास अब और कोई तरीका नहीं हैं।"

यह सुन कर आदमी का दिल एक बार फिर से टूट गया। उसने सोचा कि उसके पास जो आखिरी खाना था उसको वह अपने बच्चों के साथ बॉट कर खा ले पर उसकी पत्नी उसकी बिल्कुल भी नहीं सुन रही थी। उलटे उसने उसको और डॉटा।

अब क्योंकि आदमी एक बार पहले अपने बच्चों को जंगल में छोड़ने पर राजी हो गया था तो अब उसको दोबारा भी अपनी पत्नी की बात माननी पड़ी।

बच्चे अभी तक सोये नहीं थे सो उन्होंने माता पिता की बीच में हुई ये सारी बातें सुन ली थीं। जब उनके माता पिता सो गये तो

हैन्सैल फिर से वे पत्थर इकट्ठा करने के लिये उठा जैसे उसने पहले किया था पर आज उनकी मॉ ने घर का दरवाजा बन्द कर रखा था सो वह बाहर ही नहीं जा सका।

पर फिर भी उसने अपनी छोटी बहिन को तसल्ली दी — "ग्रैटैल, तू रो मत। आराम से सो जा। भगवान हमारी सहायता जरूर करेंगे।"

अगली सुबह सवेरे ही उनकी मॉ आयी और बच्चों को जगाया। उनको उनके हिस्से की डबल रोटी दी। इस बार यह डबल रोटी पहले से भी कम थी और सब फिर जंगल की तरफ लकड़ी लाने चल दिये।

पहले की तरह से हैन्सैल ने इस बार भी रुक रुक कर रोटी के छोटे छोटे टुकड़े किये और रास्ते में डालता चला गया।

हैन्सैल के पिता ने पूछा — "यह तुम रास्ते में बार बार क्यों रुक जाते हो? सीधे चलो न।"

हैन्सैल बोला — "मुझे अपना कबूतर अपने घर की छत पर बैठा दिखायी दे रहा है पिता जी, मुझे लगता है कि वह मुझसे विदा कहना चाहता है।"

मॉ बोली — "तुम बेवकूफ हो। वह कबूतर नहीं है। वह तो चिमनी पर पड़ती धूप है।

पर धीरे धीरे हैन्सैल ने इस तरह सारी रोटी तोड़ तोड़ कर रास्ते में फेंक दी।

एक बार फिर से आग जलायी गयी और मॉ ने बच्चों से आग के पास बैठने के लिये कहा — "अगर तुम लोग थक जाओ तो थोड़ा सो लेना। हम लोग जंगल में लकड़ी काटने जा रहे हैं। जब हमारा काम खत्म हो जायेगा तो हम तुम लोगों को आ कर ले जायेंगे।"

जब दोपहर हुई तो ग्रैटैल ने अपनी थोड़ी सी रोटी हैन्सैल को दी क्योंकि हैन्सैल ने तो अपनी रोटी रास्ते में गिरा दी थी। खा पी कर वे सो गये। शाम हो गयी पर कोई भी उनको लेने के लिये नहीं आया।

जब वे सो कर उठे तो रात हो गयी थी। ग्रैटैल फिर डर गयी थी कि अब वे लोग घर कैसे जायेंगे और रोने लगी।

पहले की ही तरह से हैन्सैल ने फिर से उसको तसल्ली दी — "तू चिन्ता न कर ग्रैटैल। जब हम यहॉ आ रहे थे तो मैं रास्ते में रोटी के टुकड़े रास्ते में डालता चला आया था। सो चॉद के निकलने का इन्तजार कर। तब मैं रोटी के उन टुकड़ों को ठीक से देख पाऊॅगा। वे टुकड़े हमको हमारे घर का रास्ता दिखायेंगे।"

कुछ देर में चॉद निकल आया। हैन्सैल ने अपने बिखेरे हुए रोटी के टुकड़ों को ढूॅढने की बहुत कोशिश की पर उसको उन फेंके हुए रोटी के टुकड़ों में से एक भी टुकड़ा दिखायी नहीं दिया। क्योंकि जंगल में उड़ने वाली हजारों चिड़ियॉ उनको खा गयी थीं।

यह देख कर ग्रैटैल फिर रोने लगी। हैन्सैल ने उसको फिर तसल्ली दी — "हमको रास्ता मिल जायेगा ग्रैटैल, तू रोती बहुत है, रो मत चुप हो जा।"

पर उनको रास्ता नहीं मिला। वे लोग सारी रात, और फिर अगला सारा दिन शाम तक चलते रहे पर उनको जंगल में से अपने घर का रास्ता नहीं मिला।

अब वे लोग बहुत भूखे थे। इस बीच उन्होंने रास्ते में मिले केवल थोड़े से जंगली बेर ही खाये थे जो नीची झाड़ियों पर लगे हुए थे।

इसके अलावा इतना चलते चलते वे थक भी बहुत गये थे। उनकी टॉगें अब बिल्कुल जवाब दे चुकी थीं। वे एक पेड़ के नीचे बैठ गये। बैठते ही उनको नींद आने लगी तो वे लेट गये और जल्दी ही सो गये।

जब वे सो कर उठे तो फिर सुबह हो गयी थी। यह घर से निकलने के बाद जंगल में उनकी तीसरी सुबह थी। वे फिर चलने लगे पर रास्ता पता न होने की वजह से वह जंगल में और अन्दर की तरफ ही चलते चले गये। उनको लगा कि अगर उनको जल्दी ही सहायता नहीं मिली तो वे तो मर ही जायेंगे।

दोपहर को उनको एक सफेद चिड़िया दिखायी दी जो एक पेड़ की शाख पर बैठी थी। वह इतना मीठा गा रही थी कि वे लोग उसका गाना सुनने के लिये वहीं ठहर गये।

जब वह गा चुकी तो वह उनके सामने से उड़ी। बच्चे भी उस के पीछे पीछे चल दिये। पीछा करते करते वे एक छोटे से घर के सामने आ गये। वहॉ आ कर वह चिड़िया उस घर की छत पर जा कर बैठ गयी।

जब वे उस घर के पास आये तो उन्होंने देखा कि वह घर तो सारा का सारा डबल रोटी का ही बना हुआ था। उसकी छत केक की बनी हुई थी और उसकी खिड़कियॉ साफ चीनी की बनी हुई थीं।

हैन्सैल बोला — "चल ग्रैटैल खाना खाते हैं। मैं तो छत का एक टुकड़ा खाऊॅगा और ग्रैटैल तू खिड़की में से खा। वह बहुत मीठी होगी।"

यह कह कर हैन्सैल घर के ऊपर चढ़ गया और यह देखने के लिये उसने छत का एक टुकड़ा तोड़ कर खाया कि वह खाने में कैसा लगता है।

उधर ग्रैटैल खिड़की के पास खड़ी हो गयी और उसको तोड़ तोड़ कर खाने लगी।

तभी अन्दर से एक मीठी सी आवाज़ आयी —

खाओ खाओ ओ चूहे, मेरा घर कौन खा रहा है?

तो बच्चों ने जवाब दिया —

हवा हवा, स्वर्ग के बच्चे

और उन्होंने उस आवाज की परवाह किये बिना ही अपना खाना जारी रखा।

हैन्सैल को छत का स्वाद बहुत अच्छा लगा सो उसने उसका एक टुकड़ा और तोड़ लिया और ग्रैटेल को खिड़की बहुत अच्छी लगी सो उसने भी एक पूरी की पूरी गोल खिड़की खाने के लिये निकाल ली।

कि तभी अचानक उस मकान का दरवाजा खुला और उसमें से एक बुढ़िया बाहर निकली। वह बुढ़िया बहुत बूढ़ी थी और लाठी ले कर चल रही थी। उसको देख कर हैन्सैल और ग्रैटेल दोनों ही इतना डर गये कि उनके हाथों में जो कुछ भी था वह सब नीचे गिर पड़ा।

पर उस बुढ़िया ने अपना सिर हिलाते हुए पूछा — "तुमको यहॉ कौन ले कर आया? आ जाओ, अन्दर आ जाओ। तुम लोग मेरे साथ रह सकते हो। यहॉ तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा।"

ऐसा कह कर उसने दोनों बच्चों का हाथ पकड़ा और उनको अपने घर के अन्दर ले गयी। अन्दर ले जा कर उसने बच्चों को बहुत अच्छा खाना खिलाया – दूध और चीनी, सेब, शहद और गिरी के साथ पैनकेक[5]।

[5] Pancake is kind of small thick Dosa made from white flour (Maidaa), milk, egg and baking powder. It is a very common breakfast in Europe and Northern America – see their picture above.

फिर उसने उनके लिये दो बिस्तर तैयार किये जिन पर धुली सफेद चादर बिछी थी। दोनों बच्चे उन बिस्तरों पर सो गये। उनको ऐसा लग रहा था जैसे वे स्वर्ग में हों।

पर वह बुढ़िया तो उनसे इस अच्छे बरताव का केवल बहाना कर रही थी। असल में तो वह एक बहुत ही नीच जादूगरनी[6] थी जो वहॉ उनके आने का इन्तजार रही थी।

उसने अपना यह घर डबल रोटी का बनाया ही इसलिये था ताकि बच्चे उसके लालच में उसके पास आ सकें। और अगर वह उनमें से एक को भी पकड़ पायेगी तो वह उसको खा जायेगी। इससे उसका कम से कम एक दिन का खाना तो हो ही जायेगा।

जादूगरनियों की ऑखें लाल होती हैं और वे बहुत ज़्यादा दूर तक नहीं देख सकतीं पर उनकी सूँघने की ताकत जानवरों जैसी होती है। उनको पता रहता है कि उनके पास कोई आदमी आ रहा है।

जब हैन्सैल और ग्रैटैल उसके घर के पास आये थे तो वह बड़ी नीचता की हॅसी हॅसी थी और बोली थी — "अब वे मुझे मिल जायेंगे और एक बार वे मेरे हाथ आ गये तो फिर निकल कर नहीं भाग पायेंगे।"

[6] Translated for the word "Witch" – see her sketch above.

अगले दिन सुबह सवेरे, बच्चों के उठने से पहले ही वह बच्चों के पास गयी और उनको बड़ी शान्ति से सोते देखा।

उन बच्चों के गाल लाल लाल थे। उनको देख कर वह बड़बड़ायी — "ओह, ये बच्चे तो खाने में बहुत ही स्वादिष्ट रहेंगे।"

कह कर उसने अपने बूढ़े हाथों से हैन्सैल का हाथ पकड़ा और उसको बाहर ले जा कर एक पिंजरे में बन्द कर दिया। अब वह वहॉ कितना भी चिल्लाता रहता कोई उसको बचाने के लिये आने वाला नहीं था।

उसके बाद उसने ग्रैटैल को उठाया — "ओ आलसिन उठ। जा और जा कर पानी ले कर आ और अपने भाई के खाने के लिये कोई अच्छी सी चीज़ बना। वह बाहर एक पिंजरे में बन्द है और मुझे उसे मोटा करना है। जब वह मोटा हो जायेगा तब मैं उसको खा जाऊॅगी।"

ग्रैटैल यह सुन कर रोने लगी पर उसके रोने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि उसको तो उस जादूगरनी का कहना मान कर वही करना था जो उसने कहा था। अब हैन्सैल को रोज बहुत अच्छा खाना मिलने लगा और ग्रैटैल को केवल केफिश[7] के खोल ही खाने को मिलते।

[7] Crayfish – a kind of fish – see its picture above.

हर सुबह वह बुढ़िया उस पिंजरे के पास जाती और चिल्लाती — "हैन्सैल, अपनी उॅगली बाहर निकालो ताकि में देख सकॅू कि तुम अभी तक मोटे हुए या नहीं।"

पर हैन्सैल एक पतली सी हड्डी बाहर निकाल देता और वह बुढ़िया अपनी खराब ऑखों की वजह से उस हड्डी को ही हैन्सैल की उॅगली समझती और सोचती कि हैन्सैल मोटा क्यों नहीं हो रहा।

इस तरह से चार हफ्ते बीत गये और हैन्सैल अभी तक पतला दुबला सा ही रहा। बुढ़िया का धीरज छूटने लगा और अब वह और इन्तजार नहीं कर सकती थी।

सो वह लड़की पर चिल्लायी — "ओ ग्रैटैल, चल जल्दी कर, थोड़ा पानी ले कर आ। अब चाहे हैन्सैल पतला हो या मोटा कल मैं उसको काट कर उबालॅूगी और खाऊॅगी।"

यह सुन कर ग्रैटैल तो सुबकने लगी कि वह बुढ़िया अब एक छोटी बहिन को उसके बड़े भाई को पकाने के लिये पानी लाने पर मजबूर कर रही थी। ऑसू उसके गालों पर बहने लगे।

रोते रोते वह बोली — "हे भगवान हमारी सहायता करो। अगर जंगल में हमको कोई जंगली जानवर खा गया होता तो हम कम से कम साथ साथ मर तो जाते।"

बुढ़िया बोली — "अपने ऑसू बचा कर रखो। ये ऑसू तुम्हारी कोई सहायता नहीं करने वाले।"

अगले दिन ग्रैटैल को सुबह सवेरे ही उठना पड़ा। उसको आग जलानी पड़ी और उसके ऊपर पानी गरम करने के लिये रखना पड़ा।

बुढ़िया बोली "पहले हम रोटी बेक[8] करेंगे। मैंने ओवन जला दिया है और आटा भी बना दिया है।"

कह कर उसने ग्रैटैल को ओवन की तरफ धक्का दिया जिसमें से आग की लपटें निकल रही थीं और बोली — "जा इसके अन्दर घुस और देख कि यह आटा रखने के लिये काफी गरम है क्या?"

और जब ग्रैटैल उसके अन्दर घुस जाती तो उसका इरादा ग्रैटैल को ओवन में बन्द कर देने का था ताकि वह उसमें बेक हो जाये और वह उसको बेक करके खा सके।

पर ग्रैटैल को अन्दाजा लग गया था कि वह बुढ़िया क्या सोच रही थी सो वह बोली — "मुझे नहीं मालूम इसके अन्दर कैसे घुसूँ?"

बुढ़िया बोली — "अरी बेवकूफ, इसका दरवाजा तो कितना बड़ा है। देख इसमें से तो मैं भी जा सकती हूँ।" कह कर उसने अपना सिर ओवन के अन्दर किया।

जैसे ही उसका सिर ओवन के अन्दर गया ग्रैटैल ने उसको ओवन के अन्दर धक्का दे दिया और वह ओवन के अन्दर गिर पड़ी। तुरन्त ही उसने ओवन का लोहे का दरवाजा बन्द कर दिया

[8] Baking is a process in which the raw material is cooked under fire kept around it. It is cooked with its heat only. Now a days where this type of food is cooked it is called oven. This type of cooking is very common in western countries. Bread, cookies, buiscuits, bread etc items are cooked in this way only.

और उसको मजबूती से बन्द रखने के लिये उसके बाहर एक डंडा लगा दिया।

दरवाजा बन्द होते ही बुढ़िया डर के मारे चिल्लाने लगी। पर ग्रैटैल अब वहॉ रुकने वाली कहॉ थी। वह तो वहॉ से भाग ली और वह बुढ़िया उस ओवन के अन्दर बहुत बुरी तरह से जल कर मर गयी।

ग्रैटैल भाग कर सीधी हैन्सैल के पास गयी, उसके पिंजरे का दरवाजा खोला और चिल्लायी — "हैन्सैल, हम लोग बच गये। वह बुढ़िया जादूगरनी मर गयी।"

हैन्सैल उस पिंजरे में उस चिड़िया की तरह से कूद कर बाहर आ गया जैसे जब कोई चिड़िया किसी के दरवाजा खोलने पर बाहर आ जाती है। वे दोनों बहुत खुश थे। वे एक दूसरे के गले से लग गये। उनको अब किसी का डर नहीं था।

वे उस जादूगरनी के घर के अन्दर चले गये। उसके घर के हर कोने में मोती और कीमती पत्थरों की आलमारियॉ रखी हुई थीं। हैन्सैल ने उनसे अपनी सारी जेबें भर लीं और बोला — "ये सफेद पत्थरों से कहीं ज़्यादा अच्छे हैं।"

ग्रैटैल बोली मैं भी इनमें से कुछ घर ले जाऊॅगी और उसने भी अपना ऐप्रन भर लिया। हैन्सैल बोला — "अब हमको यहॉ से चले जाना चाहिये। इस जादू वाले जंगल को छोड़ देना चाहिये।"

वे वहॉ से चल दिये और कुछ घंटे चलने के बाद एक बहुत बड़े तालाब के पास आ गये। हैन्सैल बोला — "अब हम इसको कैसे पार करें? यहॉ तो मुझे कोई पुल भी दिखायी नहीं देता।"

ग्रैटैल बोली — "और मुझे तो यहॉ कोई नाव भी दिखायी नहीं दे रही। पर हॉ एक सफेद बतख यहॉ जरूर तैर रही है। अगर हम इससे पूछें तो यह शायद हमको इस पानी के उस पार ले जाने के लिये तैयार हो जाये।"

सो ग्रैटैल ने उसको आवाज दी —

ओ बतख ओ बतख, हम ग्रैटैल और हैन्सैल यहॉ हैं
ना कोई सड़क है और ना ही कोई पुल है
तू हमको अपनी सफेद पीठ पर बिठा कर ले चल।"

बतख उन बच्चों के पास आ गयी। पहले हैन्सैल उस बतख की पीठ पर बैठा फिर उसने ग्रैटैल को अपने पीछे बैठने के लिये कहा तो ग्रैटैल बोली — "नहीं। बतख के ऊपर बहुत बोझा हो जायेगा। वह एक बार में केवल एक को ही ले जायेगी।"

और बतख ने ऐसा ही किया। वह उन दोनों को एक एक कर के तालाब के पार ले गयी। जब वे दोनों उस तालाब के उस पार पहुॅच गये तो थोड़ी ही दूर चलने पर उनको वह रास्ता जाना पहचाना लगा।

वहॉ से वे लोग अपने घर की तरफ दौड़ गये। कुछ ही देर में उनको अपना घर दिखायी देने लगा। घर पहुॅच कर वे अन्दर दौड़ गये और अपने पिता से जा कर लिपट गये।

जब से उनका पिता बच्चों को जंगल में छोड़ कर आया था तब से उसको एक पल भी चैन नहीं था। उनका पिता उनको देख कर बहुत खुश हुआ।

अकाल बहुत ज़ोर का था सो तब तक उसकी पत्नी भूख से मर गयी थी।

पहुॅचते ही ग्रैटैल ने अपना ऐप्रन उलटा कर दिया तो उसके ऐप्रन में भरे सारे मोती और कीमती पत्थर कमरे में बिखर गये। उधर हैन्सैल ने भी अपनी जेबें खाली कर दीं।

अब क्या था। उनके गरीबी के दिन खत्म हो गये थे और अब वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

2 चिक[9]

हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह दूसरी कहानी हमने यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक पति पत्नी थे जिनके सात बच्चे थे। पिता किसान था और खेती करता था जबकि पत्नी घर में रहती थी और घर और बच्चों की देखभाल करती थी।

एक बार बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा तो सब लोग भूख से मरने लगे। रात को बच्चे तो सो जाते पर वे पति पत्नी बेचारे चिन्ता के मारे सो नहीं पाते। पति कहता — "प्रिये, अब तो ज़िन्दगी दूभर हो गयी है। अपने बच्चों को भूखा रहते देख कर मेरा तो दिल रोता है।"

उसकी पत्नी जवाब देती — "यह तो तुम ठीक कह रहे हो पर करें क्या?"

एक दिन पति बोला — "कल जब मैं लकड़ी काटने जंगल जाऊँगा तो मैं उनको अपने साथ ले जाऊँगा और उनको वहीं छोड़ आऊँगा। उनको तिल तिल कर के मरते देखने की बजाय तो अच्छा है कि मैं उन सबको एक साथ ही खो दूँ।"

[9] Chick (Story No 130) – a folktale from Italy from its Terra d'Otranto area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

"श श श श। थोड़ा धीरे बोलो कहीं वे हमारी बात न सुन लें।"

"ओह तुम चिन्ता न करो वे तो बहुत गहरी नींद सोये हुए हैं।"

पर उनमें से उनका सबसे छोटा बेटा जो कुबड़ा था और जिसको वे सब चिक कह कर पुकारते थे वह सब कुछ सुन रहा था।

सुबह को जब वे सब सो कर उठे तो उनकी मॉ ने उनको बुलाया और उनको तैयार करके ऑखों में ऑसू भर कर प्यार करके बोली — "अच्छा बच्चो जाओ। आज तुम अपने पिता के साथ काम पर जा रहे हो।" और वे सब अपने पिता के साथ चल दिये।

रास्ते में चिक ने बहुत सारे सफेद पत्थर उठा लिये और उनको अपनी जेब में रख लिया।

जब वे सड़क छोड़ कर जंगल में घुसे तो अपने पिता की बात को ध्यान में रखते हुए चिक ने हर कदम पर एक एक पत्थर नीचे डालना शुरू कर दिया ताकि उसको घर वापस आने का रास्ता याद रह सके कि वे लोग किस रास्ते से जंगल आये थे।

जब वे बीच जंगल में पहुॅच गये तो उनके पिता ने बच्चों से कहा कि वे वहीं खेलें और वह अभी आता है। पर वहॉ से जाने के बाद वह जंगल नहीं लौटा।

रात हो आयी। जब बच्चों ने अपने पिता को नहीं देखा तो वे रोने और चिल्लाने लगे।

चिक ने उनको ढॉढस बॅधाया — "तुम लोग रोते क्यों हो? मैं तुम लोगों को घर ले जाऊॅगा तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो।"

"अच्छा अच्छा। पर अब हम क्या करें?"

वह बोला — "अभी तुम लोग ऐसा करो कि तुम लोग मेरे साथ चलो। मैं तुमको घर ले चलता हूॅ।" ऐसा कह कर उसने अपने गिराये हुए पत्थरों को ढूॅढा और उनके पीछे पीछे चलते हुए वे सब अपने घर आ गये।

उनकी मॉ उनको देख कर बहुत खुश हुई पर आश्चर्य से बोली — "पर तुम लोग घर वापस आये कैसे?"

सब बड़े बच्चों ने कहा — "चिक ने हम सबको रास्ता दिखाया मॉ और हम घर आ गये।"

वे बच्चे कुछ दिनों के लिये घर में रहे पर जल्दी ही फिर उनके पिता ने उनको जंगल में छोड़ने का विचार किया क्योंकि अकाल के खत्म होने के तो अभी कुछ आसार ही नजर नहीं आ रहे थे।

उनकी मॉ ने सात रोटियॉ खरीदने के लिये घर की हर चीज़ बेच दी थी। अगले दिन उनकी मॉ ने उन सब बच्चों को एक एक रोटी दी और उनके पिता के साथ जंगल भेज दिया।

सब बच्चों ने तो अपनी रोटी खा ली पर चिक ने नहीं खायी। उसने उसके छोटे छोटे टुकड़े किये और अपनी जेब में रख लिये।

इस बार उनका पिता चिक के पीछे पीछे चल रहा था। वह यह देखता चल रहा था कि अबकी बार तो चिक कहीं सफेद पत्थर नहीं फेंक रहा।

पर अबकी बार चिक ने पत्थर तो नहीं फेंके पर अबकी बार उसने अपनी जेब में अपनी रोटी के जो टुकड़े करके रख लिये थे सो जब वह जंगल में घुसे तो वह कदम कदम पर उन्हीं को फेंकता जा रहा था।

जब वे सब जंगल में पहुॅचे तो फिर पिछली बार की तरह से इस बार भी उनका पिता उन सबको जंगल में अकेला छोड़ कर चला गया और फिर वापस नहीं आया।

अॅधेरा होने पर भी जब पिता नहीं आया तो सारे बच्चे रोने और चिल्लाने लगे। पर चिक ने एक बार फिर उन सबको ढॉढस बॅधाया और कहा कि वह उनको उस दिन की तरह से फिर घर वापस ले जायेगा।

कह कर उसने अपनी फेंकी हुई रोटी के टुकड़ों को ढूॅढना शुरू किया तो वे तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिये। लगता था कि उनको या तो चिड़ियॉ खा गयी थीं या फिर चींटियॉ ले गयी थीं।

और चिक घर का रास्ता न ढूॅढ सका। उसके भाई फिर रो पड़े। अचानक वह बोला — "ज़रा ठहरो।" कह कर वह एक गिलहरी की तरह एक ऊॅचे पेड़ की सबसे ऊॅची वाली टहनी पर चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा।

कहीं दूर उसको एक छोटी सी रोशनी दिखायी दी। उसको देख कर वह बोला — "हमको इस दिशा में जाना चाहिये लगता है वहॉ कोई रहता है।"

सो वे सब उसी दिशा में चल दिये। काफी देर तक चलने के बाद वे एक घर के सामने आ गये। वहॉ आ कर उन्होंने उस घर का दरवाजा खटखटाया।

एक जादूगरनी ने दरवाजा खोला। उसके बाल बहुत लम्बे थे। दॉत बहुत टेढ़े थे और ऑखें लालटेन की तरह जल रही थीं। इस सबसे वह अपने असली रूप से कुछ ज़रा ज़्यादा ही जादूगरनी लग रही थी। उन बच्चों को देखते ही वह बोली — "अरे मेरे बच्चों इतनी रात में तुम कहॉ मारे मारे फिर रहे हो?"

चिक बोला — "मैम, हम लोग जंगल में रास्ता भूल गये हैं। हमने आपके घर में रोशनी जलती देखी तो इधर आ गये।"

वह जादूगरनी बोली — "यह तो तुमने बहुत ही अच्छा किया कि तुम यहॉ आ गये पर मेरे बच्चो, तुमको मुझे कहीं छिपाना पड़ेगा क्योंकि यहॉ एक पापा जादूगर रहता है जैसे ही वह पापा जादूगर यहॉ आयेगा वह तुमको एक ही कौर में खा जायेगा। पर तुम चिन्ता न करो मैंने उसके लिये एक भेड़ भून कर रखी है।

अगर तुम बिल्कुल आवाज न करो तो मैं तुमको अपने बच्चों के साथ उनके बिस्तर में लिटा दूँगी फिर तुम लोग सुरक्षित रहोगे। मेरे अपने भी सात बच्चे हैं।"

बच्चे राजी हो गये।

कुछ देर में ही पापा जादूगर घर आया तो चारों तरफ सूँघ कर बोला — "हूँ, मुझे तो आज आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

उसकी पत्नी बोली — "तुम जब भी घर आते हो यही कहते हो। आओ बैठो, देखो मैंने तुम्हारे लिये कितना स्वादिष्ट भेड़ का मॉस भून कर रखा है।

तुम अपना काम देखो और उन बेचारों को छोड़ दो। वे सात छोटे छोटे भाई बेचारे जंगल में रास्ता भूल कर यहाँ आ गये हैं।

हमारे भी तो सात बच्चे हैं। हम भी तो अपने बच्चों को किसी तरह दुखी नहीं देख सकते इसी लिये मैंने उनको भी अन्दर बुला लिया क्योंकि वे बहुत दुखी थे।"

पापा जादूगर ने कहा — "ठीक है तुम मुझे भेड़ का मॉस ही दे दो। मैं बहुत थक गया हूँ और जल्दी सोने जाना चाहता हूँ।"

जब पापा जादूगर के बच्चे सोने के लिये जाते थे तो वे अपने सिरों पर फूलों के मुकुट पहन कर जाते थे। वे एक बड़े बिस्तर पर सोते थे। उनके पैरों की तरफ जादूगरनी ने चिक और उसके भाइयों को सुला दिया था।

जैसे ही जादूगरनी कमरे से बाहर गयी चिक ने सोचा कि जादूगरनी के बच्चों ने फूलों के मुकुट क्यों पहन रखे हैं। इसके पीछे कोई राज़ तो जरूर था।

उसने पापा जादूगर के सातों बच्चों के फूलों के मुकुट उतार कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर रख दिये।

जैसे ही उसने यह काम खत्म किया कि उसने देखा कि पापा जादूगर दबे पॉव उस कमरे में चला आ रहा था। और कमरे में क्योंकि अँधेरा था इसलिये उसने आ कर बच्चों को हाथ से छू छू कर देखना शुरू किया।

फिर उसने चिक और उसके भाइयों को सिर पर छुआ तो उनके सिर पर फूलों का मुकुट पाया तो उसने उनको छोड़ दिया। उसने फिर से अपने बच्चों को छुआ तो उनके सिर पर फूलों का मुकुट नहीं पाया सो वह उनको एक एक करके खा गया।

यह सब देख कर चिक तो पत्ते की तरह कॉप गया। पापा जादूगर ने जब अपना आखिरी बेटा खा लिया तो उसको खा कर अपने होठ चाटे और बोला — "अब तो मैंने सब बच्चों को खा लिया है। अब मेरी पत्नी जो चाहे कह सकती है।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

चिक ने अपने भाइयों को तुरन्त उठाया और बोला —"हमको यहॉ से बाहर निकलना है तुरन्त।" उन्होंने खिड़की खोली और सब बच्चे उसमें से बाहर कूद गये। जंगल में भागते भागते वे एक गुफा

के पास आ गये थे। वे लोग थक गये थे सो वे लोग वहीं छिप गये।

अगली सुबह जब जादूगरनी उठी तो उसको न तो अपने बच्चे दिखायी दिये और न ही आये हुए सातों भाई दिखायी दिये। पर बिस्तर पर पड़े हुए निशानों से वह जान गयी कि क्या हुआ होगा।

वह अपने बाल खींचती हुई और रोती हुई जादूगर की तरफ भागी — "ओ कातिल, ओ राक्षस, ज़रा आ कर तो देखो तुमने क्या किया?"

जब जादूगर की पत्नी ने जादूगर को यह बताया कि उसने क्या किया तो यह सुन कर तो जादूगर चौंक कर दौड़ा — "क्या? क्या हमारे बच्चे फूलों के मुकुट नहीं पहने हुए थे? ऐसा कैसे हुआ?

तुम जल्दी से मेरे वे जादू वाले जूते दो जो सौ मील घंटे की रफ्तार से भागते हैं। मैं उन बदमाशों को जा कर अभी पकड़ता हूँ। मैं उनको कच्चा ही चबा जाऊँगा।"

कह कर उसने अपने वे तेज़ भागने वाले जूते पहने और उन बच्चों को ढूँढने के लिये चल दिया। उसने सारी धरती छान मारी पर उसको बच्चे नहीं मिले क्योंकि वे तो गुफा में छिपे हुए थे।

ढूँढते ढूँढते आखिर वह थक कर जमीन पर बैठ गया। इत्तफाक से वह उसी गुफा के पास आ बैठा था जहॉ बच्चे छिपे हुए थे।

चिक ने जो हमेशा खाना ढूँढने में लगा रहता था उसको वहीं लेटे हुए देख लिया तो अपने भाइयों को बुलाया और उनसे कहा — "जल्दी से तुम सब लोग मिल कर इसको मार दो।"

सो सबने अपनी अपनी रोटी काटने वाले चाकू निकाले और उससे उसको मारना शुरू कर दिया और तब तक मारते रहे जब तक कि उसका सारा शरीर छलनी नहीं हो गया।

जब उनको यह यकीन हो गया कि वह मर गया है तो उन्होंने उसके जूते निकाल लिये और वे सब उन जूतों में चढ़ गये। जूते जादू के थे सो सब बच्चे उनके अन्दर आ गये। वे जूते उन सबको ले कर भाग चले।

तुरन्त ही वे सातों भाई जादूगरनी के पास पहुँचे और उससे कहा — "पापा जादूगर डाकुओं के चंगुल में फॅस गये हैं। उन्होंने हमसे कहलवाया है कि अगर आपने उन डाकुओं को पापा का सारा पैसा नहीं दिया तो वे पापा को मार देंगे।

आपको इसका विश्वास आ जाये इसलिये उन्होंने हमको अपने ये जूते दे दिये हैं।"

जादूगरनी ने अपने बच्चे तो पहले ही खो दिये थे अब वह अपना पति को खोना नहीं चाहती थी सो यह सुन कर उसने तुरन्त

ही उस जादूगर का सारा पैसा, हीरे, सोना उन बच्चों को दे दिया और बोली — "यह लो बेटा उसका सारा पैसा और जा कर उसको छुड़ा लो।"

बच्चों ने वह सारा पैसा उठाया और वे जूते पहन कर एक कदम में ही अपने घर पहुँच गये। इस पैसे को पा कर वे अब बहुत अमीर हो गये थे।

चिक उन जादू वाले जूतों को पहन कर नैपिल्स[10] गया और सामान लाने ले जाने वाला बन गया क्योंकि उन दिनों रेलगाड़ियॉ और स्टीम बोट नहीं हुआ करती थीं।

इस तरह से उस छोटे से कुबड़े बेटे ने अपने सारे परिवार को अमीर बना दिया।

[10] Naples is a coastal town of Italy on its South-West coast.

3 थम्ब[11]

हैन्सेल ओर ग्रैटैल जैसी थम्ब की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश में कही सुनी जाती है और वहॉ यह कथा बहुत लोकप्रिय है।

बहुत समय पुरानी बात है कि एक जगह एक लकड़हारा और उसकी पत्नी रहते थे। उनके सात बच्चे थे। वे सब लड़के थे। उनका सबसे बड़ा लड़का दस साल का था और सबसे छोटा लड़का सात साल का।

लोग यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित थे कि इस लकड़हारे के इतने कम समय में इतने सारे बच्चे थे पर उसकी पत्नी को बच्चों का बहुत शौक था सो एक बार में उसने दो बच्चों से कम को जन्म ही नहीं दिया।

ये लकड़हारा पति पत्नी बहुत गरीब थे और इतने सारे बच्चों से उनको काफी परेशानी होती थी क्योंकि उनमें से उनका एक भी बच्चा अपने तरीके से अपनी कमाई नहीं कर सकता था।

---

[11] The Thumb – a fairy tale from France, Europe. Written by Charles Perrault.
DL Ashliman has taken it from "The Blue Fairy Book", by Andrew Lang, ca. 1889.
Andrew Lang took it from, "Histoires ou contes du temps passé, avec des moralités: Contes de ma mère l'Oye", by Charles Perrault. Paris, 1697.
Edited by D. L. Ashliman. 2002.
Its English version may be read at http://www.pitt.edu/~dash/perrault08.html

वे दोनों इसलिये और भी ज़्यादा परेशान रहते थे क्योंकि उनका यह सबसे छोटा वाला बेटा काफी बीमार भी रहता था। वह मुश्किल से ही कुछ बोल पाता था जो उन लोगों को लगता था कि वह उसकी बेवकूफी की निशानी थी। हालॉकि यह कम बोलना उसका एक बहुत अच्छा गुण था।

वह बहुत छोटा था। जब वह पैदा हुआ था तो वह एक अँगूठे के बराबर का था इसलिये वे उसको छोटा अँगूठा कह कर ही पुकारते थे।

इसके अलावा घर में कोई भी गलती करता तो सारे लोग उस गलती का इलजाम उसी के सिर मढ़ देते चाहे उस बेचारे की कोई गलती होती या नहीं।

पर वह बहुत चालाक और होशियार था। उसमें उसके बाकी भाइयों की अक्ल मिला कर भी उन सबसे ज़्यादा अक्ल थी। हालॉकि वह बोलता बहुत कम था पर सुनता बहुत था।

एक साल बहुत बुरा आया। उस साल बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा तो उन लोगों ने अपने बच्चों को घर में से कहीं बाहर निकालने का फैसला किया।

एक शाम जब सब बच्चे सोने चले गये और लकड़हारा अपनी पत्नी के पास आग के पास बैठा था उसने दुख से फटते हुए दिल से अपनी पत्नी से कहा।

"प्रिये, तुम तो देख ही रही हो कि इस अकाल के समय में हमको अपने बच्चों को रखने में कितनी परेशानी हो रही है और मैं इन बच्चों को अपनी ऑखों के सामने भूखे मरते नहीं देख सकता।

मैंने उनको कल जंगल में छोड़ने का विचार बना लिया है। और यह काम आसान है। जब वे लकड़ियों के गट्ठर बॉध रहे होंगे तो हम उनकी नजर बचा कर उनको वहॉ छोड़ कर चले आयेंगे।"

यह सुन कर उसकी पत्नी रो पड़ी और बोली — "क्या तुम्हारा दिल इतना सख्त है कि तुम इन मासूम से बच्चों को जंगल में अकेले छोड़ आओगे?"

लकड़हारे ने उसको अपनी गरीबी की हालत समझाने की बहुत कोशिश की पर उसकी पत्नी कुछ सुनने को तैयार नहीं थी। वह गरीब जरूर थी पर वह उन बच्चों की मॉ थी।पर अपनी हालत देख कर आखिर वह उन बच्चों को जंगल में छोड़ने को तैयार हो गयी और रोते रोते सोने चली गयी।

छोटा ऑगूठा अपने बिस्तर में लेटे लेटे उन दोनों की सारी बातें सुन रहा था। जब वे लोग बात कर रहे थे तो वह धीरे से उठा और यह सुनने के लिये कि वे क्या बात कर रहे थे जा कर अपने पिता के स्टूल के नीचे छिप गया।

उनकी बातें सुनने के बाद वह फिर अपने बिस्तर पर चला गया पर न तो वह वहॉ सोया और न ही उसने वहॉ अपनी ऑख ही

झपकायी। वह तो रात भर बस यही सोचता रहा कि कल उसे क्या करना है।

वह सुबह बहुत जल्दी उठ गया और नदी के किनारे चला गया। वहॉ से उसने कुछ छोटे छोटे सफेद पत्थर चुने और घर वापस आ गया।

सुबह सभी जंगल जाने के लिये तैयार हो कर बाहर चल दिये पर छोटे अॅगूठे ने जो कुछ भी उसने रात को अपने माता पिता के बीच हुई बात सुनी थी उसका एक शब्द भी अपने भाइयों से नहीं कहा।

चलते चलते वे सब एक घने जंगल में पहुॅच गये। वह जंगल इतना घना था कि किसी को दस कदम दूर की भी कोई चीज़ दिखायी नहीं देती थी।

वहॉ पहुॅच कर लकड़हारे ने अपना काम शुरू कर दिया और बच्चों ने लकड़ी के गट्ठर बॉधने शुरू कर दिये। जब बच्चों के माता पिता ने देखा कि बच्चे तो अपने काम में लग गये हैं तो वे चुपके से वहॉ से खिसक लिये। झाड़ियों के सहारे सहारे चलते चलते वे एक दूसर रास्ते से घर आ गये।

कुछ देर बाद ही बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता तो वहॉ कहीं नहीं हैं और वे तो जंगल में अकेले रह गये हैं तो उन्होंने सबने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

छोटे अॅगूठे ने उनको थोड़ी देर तक तो रोने दिया क्योंकि वह जानता था कि वह उन सबको घर वापस ले जा सकता था।

क्योंकि जंगल आते समय वह नदी से लाये हुए अपने सफेद पत्थर रास्ते में थोड़ी थोड़ी दूर पर डालता आया था और अब उन्हीं के सहारे वह उन सबको घर वापस चला जायेगा।

थोड़ी देर बाद वह बोला — "भैया, रोओ नहीं। हमारे माता पिता हमको यहॉ छोड़ गये हैं पर मैं तुम सबको घर ले जाऊॅगा बस तुम सब मेरे पीछे पीछे चलते चले आओ।"

सो छोटे अॅगूठे ने उनको रास्ता दिखाया और वे सब उसी रास्ते पर चल कर घर पहुॅच गये जिससे वे आये थे। पर उनकी घर के अन्दर जाने की हिम्मत नहीं हुई। वे सब दरवाजे पर ही बैठ गये और अपने माता पिता की बात सुनने लगे जो वे उस समय कर रहे थे।

लकड़हारा और उसकी पत्नी भी अभी अभी घर आये ही थे कि उनका मकान मालिक उनको बीस क्राउन[12] दे गया जो उसने बहुत पहले कभी उन लोगों से उधार लिये थे और जिनको वे वापस पाने की उम्मीद भी नहीं कर रहे थे।

इस पैसे से तो लकड़हारे को नयी ज़िन्दगी मिल गयी। उसने तुरन्त ही अपनी पत्नी को कसाई की दूकान पर मॉस लाने के लिये

[12] Crown – the then currency used in Europe

भेजा। वह भी वहॉ से अपने दोनों की जरूरत से तीन गुना ज़्यादा मॉस ले आयी।

जब वे दोनों खाना खा चुके तो पत्नी बोली — "अफसोस हमारे बच्चे पता नहीं कहॉ होंगे। अगर वह यहॉ होते तो उनको भी कितना अच्छा खाना मिलता। विलियम[13], तुमको उनको जंगल में छोड़ने के लिये किसने कहा था? मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि तुम उनको जंगल में छोड़ने के बाद पछताओगे।

पता नहीं वे जंगल में इस समय क्या कर रहे होंगे। हे भगवान कहीं उन सबको भेड़िया ही न खा गया हो। तुमने उनको जंगल में इस तरह अकेला छोड़ कर कोई इन्सानियत का काम नहीं किया।"

इतना सब सुन कर लकड़हारे का धीरज छूट गया क्योंकि उसकी पत्नी ने यह सब उससे कम से कम बीस बार से ज़्यादा कहा होगा कि वे लोग बच्चों को जंगल में इस तरह से अकेला छोड़ कर पछतायेंगे। और उसने ठीक भी कहा था।

फिर भी लकड़हारे ने उसको डॉटा कि अगर वह चुप नहीं रही तो वह उसको बहुत पीटेगा। ऐसा नहीं था कि लकड़हारे को इस बात का कुछ कम दुख था कि वह अपने बच्चों को जंगल में अकेला छोड़ आया था पर क्योंकि वह उसको बार बार यह सब कह रही थी यही उसको बुरा लग रहा था।

[13] William – name of the woodcutter

वह भी दूसरों की तरह से यही मानता था कि पत्नियॉ अक्सर सही ही बोलती हैं पर उनको उस बात को बार बार नहीं कहना चाहिये

उसकी पत्नी तो बस रोये जा रही थी और रोये जा रही थी — "ओह मेरे बच्चे पता नहीं कहॉ होंगे। मेरे प्यारे बच्चे।"

अबकी बार उसने यह इतनी ज़ोर से कहा कि दरवाजे के बाहर बैठे उसके सारे बच्चे ज़ोर से रो पड़े और चिल्ला कर बोले — "मॉ हम यहॉ हैं, मॉ हम यहॉ हैं।"

अपने बच्चों की आवाज सुन कर उनकी मॉ दरवाजे की तरफ दरवाजा खोलने दौड़ी। दरवाजा खोल कर उसने अपने बच्चों को गले लगाया और बोली — "ओह तुम सबको यहॉ देख कर मैं कितनी खुश हूँ मेरे बच्चों। तुम सबको भूख लगी होगी और तुम लोग थके हुए भी होगे। आओ चलो खाना खा लो।

और मेरा बेचारा यह पीटर, यह तो बहुत ही गन्दा हो रहा है। चल अन्दर चल पहले मैं तुझे नहला दूँ।"

पीटर उनका सबसे बड़ा बेटा था जिसको वह सबसे ज़्यादा प्यार करती थी क्योंकि उसके बाल लाल थे जैसे कि उसके अपने थे।

पहले उसने पीटर को नहलाया फिर सब खाना खाने बैठे और सबने खूब पेट भर कर खाना खाया। इससे उनके माता और पिता दोनों ही बहुत खुश हुए।

बच्चों ने उनको बताया कि वे जंगल में कितना डर गये थे। यह सब वे एक साथ बोल रहे थे। माता पिता दोनों ही अपने बच्चों को एक बार फिर से घर में देख कर बहुत खुश थे।

यह खुशी तब तक चलती रही जब तक दस क्राउन बचे पर फिर जब सारा ही पैसा खत्म हो गया तो वे फिर बेचैन हो गये और वे बच्चों को फिर से जंगल में छोड़ने के लिये सोचने लगे।

इस बार उन्होंने उनको जंगल में और ज़्यादा दूर ले जा कर छोड़ने का प्लान बनाया।

हालॉकि इसके बारे में वे यह सब बहुत ही चुपचाप बात कर रहे थे पर फिर भी छोटे अॅगूठे ने सब कुछ सुन लिया। उसने पिछली बार की तरह से इस मुसीबत से निकलने का वही प्लान बनाया जो पहले बनाया था।

कि वह नदी से फिर से पत्थर चुन लायेगा और फिर से उनको जंगल जाते समय रास्ते भर गिराता जायेगा और लौटते समय फिर से उनको देख कर घर वापस आ जायेगा।

सुबह को वह नदी से पत्थर लाने के लिये बहुत जल्दी उठा पर वह घर के बाहर ही न जा सका क्योंकि उस दिन घर का दरवाजा बन्द था और उसमें ताला भी लगा था।

सुबह को उनके पिता ने उनको नाश्ते के लिये डबल रोटी का एक एक टुकड़ा दिया। छोटे अॅगूठे को लगा कि वह इस डबल रोटी का इस्तेमाल उन सफेद पत्थरों की तरह कर लेगा।

वह उस डबल रोटी के छोटे छोटे टुकड़े रास्ते में डालता जायेगा और फिर उन्हीं के सहारे घर वापस आ जायेगा। सो उसने अपनी डबल रोटी खायी नहीं और अपनी जेब में रख ली।

बच्चों के माता पिता उनको इस बार जंगल के एक बहुत ही घने हिस्से में ले गये और वहॉ उनको पहले की तरह अकेला छोड़ कर घर वापस आ गये।

छोटे अॅगूठे को इस बार भी कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वह सोच रहा था कि वह पहले की तरह से उन डबल रोटी के टुकड़ों के सहारे घर पहुॅच जायेगा जो वह आते समय रास्ते में डालता आया था।

सो जब वे लोग अकेले रह गये तो छोटे अॅगूठे ने फिर अपने भाइयों को तसल्ली दी और घर लौटने का रास्ता ढूॅढने के लिये अपने डाले हुए डबल रोटी के टुकड़े ढूॅढने लगा।

पर आश्चर्य उसको तो डबल रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा भी दिखायी नहीं दिया। उन डबल रोटी के टुकड़ों को तो चिड़ियें आ कर खा गयी थीं।

अब तो वे सब बहुत परेशान हुए। क्योंकि जितना वे आगे चलते जाते थे उतना ही वे अपने आपको और घने जंगल में पाते जाते थे।

रात होने वाली हो रही थी और हवा भी बहुत तेज़ हो गयी थी। जंगल में वह तेज़ हवा इतनी आवाजें कर रही थी कि वे सभी

बहुत डर रहे थे। डर के मारे न तो वे कुछ बोल पा रहे थे और न ही अपना सिर घुमा कर इधर उधर कुछ देख पा रहे थे।

इसके बाद बारिश आ गयी जिससे वे पूरे के पूरे भीग गये और जंगल में बार बार फिसल कर गिरने लगे। वे कीचड़ में लथपथ हो गये और ठंड की वजह से उनके हाथ पैर सुन्न पड़ने लगे।

छोटा अॅगूठा यह देखने के लिये एक पेड़ पर चढ़ गया कि शायद उसको कहीं कुछ दिखायी दे जाये। उसने वहॉ चारों तरफ अपना सिर घुमा घुमा कर देखा तो उसको बहुत दूर एक बहुत छोटी सी रोशनी चमकती दिखायी दी जैसे किसी मोमबत्ती की रोशनी होती है।

वह पेड़ से नीचे उतरा पर जमीन पर से उसको वह रोशनी दिखायी नहीं दे रही थी इससे उसको बहुत चिन्ता हुई। फिर भी वह अपने भाइयों के साथ उस तरफ चला जिस तरफ उसने वह रोशनी देखी थी। धीरे धीरे वे जंगल से बाहर आ गये और रोशनी के पास भी आ गये।

यह रोशनी एक घर में जल रही थी। पर वहॉ जाने में तो इनको डर ही डर लग रहा था क्योंकि जैसे जैसे वे उस रोशनी की तरफ बढ़ते जा रहे थे वह रोशनी उनसे दूर होती जा रही थी।

आखिरकार वे उस घर तक आ पहुॅचे जिसमें वह रोशनी जल रही थी। वहॉ आ कर उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया। एक

भली सी स्त्री ने दरवाजा खोला और उनसे पूछा कि उनको क्या चाहिये।

छोटा अॅगूठा बोला कि वे गरीब बच्चे थे जो जंगल में खो गये थे सो भगवान के लिये वह रात को रहने की जगह चाहते थे।

उस स्त्री ने देखा कि वे बच्चे देखने में अच्छे थे तो उनको देख कर वह रो पड़ी और उनसे पूछा — "बच्चो, तुम लोग कहॉ से आये हो? क्या तुम लोगों को मालूम हे कि यह मकान एक बेरहम ओगरे[14] का है जो छोटे बच्चों को खा जाता है?"

यह सुन कर तो सारे बच्चे डर के मारे कॉपने लगे। छोटा अॅगूठा भी कॉपने लगा था पर फिर भी हिम्मत करके बोला — "मैम, फिर हम क्या करें अगर आप हमको यहॉ सोने नहीं देंगी तो जंगल में भेड़िये हमको खा जायेंगे।

हम चाहते हैं कि बजाय भेड़िये के यह भला आदमी ही हमको खा जाये। और यह भी हो सकता है कि उसको हमारे ऊपर दया आ जाये और वह हमको छोड़ दे, खास करके अगर आप उससे हमारी ज़िन्दगी की भीख मॉगें तो।"

[14] An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings – see his picture above.

ओगरे की पत्नी को लगा कि वह उन बच्चों को अपने पति से सुबह तक के लिये छिपा सकती है सो उसने उनको घर के अन्दर बुला लिया। आग जला कर उनको उसके पास बिठा कर उनकी ठंड दूर की।

उस ओगरे के खाने के लिये एक पूरी की पूरी भेड़ आग पर भुन रही थी। जब बच्चों को थोड़ी गरमी आ गयी तो उन्होंने दरवाजे पर तीन चार बार खटखटाहट सुनी। यह ओगरे था जो अब घर वापस लौट आया था।

ओगरे के आने की आवाज सुन कर उसकी पत्नी ने बच्चों को पलंग के नीचे छिपा दिया और फिर अपने पति के लिये दरवाजा खोला।

ओगरे ने आते ही पूछा कि उसका खाना तैयार था कि नहीं। ओगरे की पत्नी ने कहा कि उसका खाना तैयार था। ओगरे ने शराब निकाली और मेज पर बैठ गया। वह भेड़ अभी कच्ची थी और खून से भरी थी पर उसको वह वैसी ही अच्छी लगती थी।

फिर उसने अपने चारों तरफ सूँघा और बोला कि उसको तो कहीं से ताजा मॉस की खुशबू आ रही थी। उसकी पत्नी बोली — "मैंने अभी एक बछड़ा काटा है तुमको उसी की खुशबू आ रही होगी।"

पर ओगरे अपनी बात पर अड़ा रहा और गुस्से से अपनी पत्नी की तरफ देख कर बोला — "मैं कह रहा हूँ न कि मुझे ताजा मॉस

की खुशबू आ रही है। और यहॉ पर भी कुछ है जो मैं समझ नहीं पा रहा हूॅ।"

यह बोलते बोलते वह मेज पर से उठ गया और सीधा पलंग के पास गया और उसके नीचे झॉकता हुआ बोला — "आहा, अब मैं देखता हूॅ कि तू मुझे कैसे धोखा देती है ओ नीच स्त्री। पता नहीं मैं तुझको ही क्यों नहीं खा सकता।

यह तो तेरी अच्छी किस्मत है कि तू इतनी सख्त है पर यहॉ तो आज बहुत ही अच्छा शिकार है जो आज मुझे मेरे तीन ओगरे दोस्तों के लिये मिल गया है। मेरे वे दोस्त बस एक दो दिन में यहॉ आने ही वाले हैं।"

यह कहते हुए उसने उन सब बच्चों को एक एक करके पलंग के नीचे से बाहर खींच लिया। बच्चे बेचारे अपने घुटनों पर बैठ गये और उससे दया की भीख मॉगने लगे।

पर यह तो उनको मालूम ही नहीं था कि वे तो दुनियॉ के सबसे ज़्यादा बेरहम ओगरे से बात कर रहे थे। उसके दिल में दया तो दूर उसने तो उनको अपनी नजरों से ही खा लिया था।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "ये तो बहुत ही नरम हैं सो नमकीन सौस से खाने में ज़्यादा अच्छे लगेंगे।"

फिर उसने एक बड़ा सा चाकू उठाया और अपने बॉये हाथ में पकड़े पत्थर पर घिस कर उसको तेज़ करने लगा। फिर उसने एक

बच्चे को मारने के लिये पकड़ लिया तो उसकी पत्नी बोली — "तुम इसको अभी क्यों मारते हो? कल ठीक नहीं रहेगा क्या?"

ओगरे चिल्लाया — "तू अपनी यह सब बातें बन्द कर। अगर मैं इनको अभी मारूँगा तो इनका मॉस ज़्यादा नरम रहेगा।"

उसकी पत्नी बोली — "पर अभी तो तुम्हारे पास बहुत सारा मॉस है खाने के लिये। तुमको अभी इनको खाने की जरूरत नहीं है। देखो न तुम्हारे पास खाने के लिये यह बछड़ा है, दो भेड़ हैं, आधा सूअर है। क्या इतना काफी नहीं है?"

ओगरे बोला — "यह तो तू ठीक कहती है। ठीक है तू इन को ठीक से खाना खिला ताकि ये दुबले न हो जायें।"

वह भली स्त्री यह सुन कर बहुत खुश हुई कि उसने उन बच्चों को कम से कम एक रात के लिये तो बचा ही लिया। उसने उन बच्चों को बहुत अच्छा खाना खिलाया पर वे बच्चे इतने डरे हुए थे कि वे बेचारे कुछ खा ही नहीं सके।

ओगरे फिर से अपनी शराब पीने बैठ गया था। वह बहुत खुश था कि आज उसके पास अपने दोस्तों को खिलाने के लिये कुछ अच्छी चीज़ थी। आज तो उसने दर्जनों गिलास शराब पी जो उसके सिर में चढ़ गयी और उसको बहुत जल्दी ही नींद आने लगी।

ओगरे के सात छोटी छोटी बेटियाँ थीं। वे सब बहुत गोरी थीं क्योंकि वे सब अपने पिता की तरह से ताजा मॉस खाती थीं। पर

उनकी ऑखें छोटी, कुछ गोल और भूरी थीं। उनकी नाक थोड़ी मुड़ी हुई थी और उनके दॉत बहुत तेज़ और एकसार थे।

अभी तो वे ज़्यादा शरारतें नहीं करती थीं पर ऐसा लगता था कि जब वे बड़ी हो जायेंगी तब जरूर करेंगी क्योंकि उन्होंने अभी उन बच्चों को उनका खून पीने के लिये काट लिया था।

वे जल्दी सोने चली जाती थीं। वे एक बड़े से पलंग पर सोती थीं और सोते समय भी उनके हर एक के सिर पर एक सोने का ताज होता था।

ओगरे की पत्नी ने उन सातों लड़कों को टोपियॉ पहना दीं और उनको भी उसी कमरे में सोने के लिये एक बड़ा पलंग दे कर वह खुद भी सोने चली गयी।

छोटे अॅगूठे ने देखा कि ओगरे की बेटियॉ अपने सिरों पर ताज पहने थीं तो उसने सोचा कि पता नहीं ओगरे अपना दिमाग उन सब को मारने के बारे में बदले या नहीं बदले तो वे बेचारे तो बेमौत ही मारे जायेंगे।

सो वह आधी रात को उठा और अपने और अपने भाइयों की टोपियॉ उतार कर ओगरे की बेटियों के पलंग की तरफ चला।

वहॉ जा कर उसने उनके ताज उतार लिये और अपने भाइयों की टोपियॉ उनके सिर पर पहना दीं और उनके ताज ला कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर पहन लिये ताकि वह ओगरे उनको अपनी बेटियॉ समझ कर न मारे जिनको वह मारना चाहता था।

यह सब उसके प्लान के अनुसार ठीक ही हुआ क्योंकि ओगरे ने उन बच्चों को अगले दिन का मारने का प्लान रोक कर उनको उसी रात को मारने का प्लान बना लिया।

वह आधी रात को उठा और अपना बड़ा चाकू ले कर उस कमरे में आया जहॉ सब बच्चे सोये हुए थे। उसने सोचा कि ऐसी गलती वह दोबारा नहीं करेगा कि बच्चों को मारने का काम वह कल पर छोड़ दे।

उसने देखा कि एक पलंग पर सात बच्चे ताज लगा कर सोये हुए थे और दूसरे पलंग पर सात बच्चे टोपी ओढ़ कर सोये हुए थे। इन ताज वाले सात बच्चों में से केवल छोटा अॅगूठा ही जागा हुआ था बाकी सब गहरी नींद सोये हुए थे।

ओगरे उधर आया जिधर बच्चे ताज लगा कर सोये हुए थे और जब उसने उन सबके ताज महसूस किये तो बोला अरे यह तो मैं कितनी बड़ी गलती करने वाला था। मैं तो अपनी ही बेटियों को ही मार देता। लगता है कि मैंने रात को कुछ ज़रा ज़्यादा ही पी ली थी। चलता हूॅ पलंग के दूसरी तरफ चलता हूॅ।

फिर वह उस पलंग की तरफ गया जहॉ उसकी बेटियॉ लेटी हुई थीं। वहॉ उसने लड़कों की टोपियॉ महसूस की तो वह खुश हो कर बोला — "आहा तो ये हैं मेरे वे लड़के जिनको मुझे मारना है।"

तुरन्त ही उसने बिना किसी हिचक के अपनी सातों बेटियों के सिर काट दिये।

खुश हो कर कि उसने जो कुछ किया अच्छा ही किया वह फिर से अपने बिस्तर पर चला गया और लेट कर खर्राटे मारने लगा।

जैसे ही छोटे अॅगूठे ने ओगरे को खर्राटे मारते सुना उसने अपने भाइयों को जल्दी से जगाया और कपड़े पहन कर तैयार होने को कहा। तैयार हो जाने पर वह छोटा अॅगूठा उन सबको वहॉ से ले कर ओगरे के घर के बागीचे में निकाल कर ले गया।

वहॉ से उन सबने उस बागीचे की दीवार फॉदी और फिर वे सब रात भर भागते रहे। वे सब डर के मारे कॉप रहे थे और उनको यह भी पता नहीं था कि वे किधर की तरफ भाग रहे थे।

सुबह को जब ओगरे उठा तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "जा ऊपर जा और उन सब गधों को तैयार करके यहॉ ले आ जो कल रात यहॉ आये थे।"

ओगरे की पत्नी अपने पति की इस अच्छाई पर बहुत चकित थी। उसने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि ओगरे उन बच्चों को किस तरह तैयार करने की सोच रहा था। वह तो यह सोचे बैठी थी कि ओगरे ने उसको उनको कपड़े पहना कर वहॉ लाने के लिये कहा था।

वह तुरन्त ऊपर गयी पर वहॉ यह देख कर तो वह दुख से पागल सी हो गयी कि उसकी अपनी सातों बेटियों के गले कटे पड़े थे और वे अपने ही खून में लथपथ पड़ी थीं। वह तो उनको देखते ही बेहोश हो गयी।

उधर ओगरे ने सोचा कि उसकी पत्नी को उन सबको तैयार करने में काफी समय लग रहा है तो वह उसकी सहायता करने के लिये खुद ऊपर गया। वहॉ जा कर उसने भी जो कुछ देखा उससे वह खुद भी कोई कम आश्चर्यचकित नहीं हुआ।

वह रो कर बोला — "ओह यह मैंने क्या किया। मैंने तो अपनी ही बेटियों को मार दिया। उन कमीनों को इसका बहुत जल्दी बदला चुकाना पड़ेगा।"

फिर उसने अपनी पत्नी को होश में लाने के लिये उसके चेहरे पर ठंडा पानी फेंका। जैसे ही वह होश में आयी तो उससे बोला — "जल्दी से मेरे सात लीग वाले जूते[15] ले कर आ ताकि मैं उन सबको पकड़ सकूँ।"

ओगरे की पत्नी उसके सात लीग वाले जूते ले आयी। उनको पहन कर वह ओगरे उन लड़कों की तलाश में धरती पर चारों तरफ घूमता रहा। आखिर वह उस सड़क पर आ गया जिस पर वे बच्चे थे। वे बच्चे भी अब अपने घर से सौ कदम की दूरी पर भी नहीं थे।

[15] A league is a unit of length. It was long common in Europe and Latin America, but it is no longer an official unit in any nation. The word originally meant the distance a person could walk in an hour. On land, the league was most commonly defined as three miles, though the length of a mile could vary from place to place and depending on the era. At sea, a league was three nautical miles (6,076 yards; 5.556 kilometers). So it all depends on the era and place. Seven League shoes means that those shoes could take their wearer 7 leagues in one stride.

बच्चों ने ओगरे को पहाड़ों के ऊपर से और नदी पार करके ऐसे आते हुए देखा जैसे बच्चे कूदते फॉदते चले आते हैं। उसको इस तरह आता देख कर छोटा अॅगूठा और उसके भाई वहीं पास की एक गुफा में छिप गये और ओगरे को देखते रहे।

ओगरे अपनी इस लम्बी और बेकार यात्रा से इस समय बहुत थका हुआ था सो उसने वहॉ आराम करने का निश्चय किया। इत्तफाक से वह उसी चट्टान के ऊपर बैठ गया जिसकी गुफा में बच्चे छिपे हुए थे। वह इतना थक गया था कि बैठते ही उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

सोते ही वह खर्राटे मारने लगा। उसके खर्राटों से तो बच्चे इतने डर गये जितना कि वे तब भी नहीं डरे थे जब उसने उनका गला काटने के लिये अपना चाकू निकाला था। पर छोटा अॅगूठा इतना ज़्यादा नहीं डर रहा था।

उसने अपने भाइयों से कहा कि वे तुरन्त ही अपने घर भाग जायें जब तक यह ओगरे यहॉ सोता है। और उनको उसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह भी घर जल्दी ही पहुॅच जायेगा। उसके भाई तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गये।

छोटा अॅगूठा चुपचाप ओगरे के पास आया और उसने ओगरे के पैरों में से उसके सात लीग वाले जूते निकाले और उनको अपने पैरों में पहन लिया।

वे जूते बहुत लम्बे और बड़े थे पर क्योंकि वे जादुई जूते थे उसके पैरों आ कर वे उसी के पैरों के साइज़ के हो गये। उनको पहन कर वह तुरन्त ओगरे के घर गया जहॉ उसकी पत्नी अपनी बेटियों के मरने के गम में रो रही थी।

छोटा अॅगूठा वहॉ जा कर बोला — "आपके पति खतरे में हैं। उनको चोरों के एक गिरोह ने पकड़ लिया है। अगर उन्होंने उन चोरों को अपना सारा सोना चॉदी और अपना सारा कीमती सामान नहीं दिया तो वे उनको मार डालेंगे।

जब मैं वहॉ से चला तो वे उनकी गरदन पर अपना चाकू रखे हुए थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं यह सब आपसे कह दूॅ। क्योंकि यह सब करना बहुत जल्दी था इसलिये उन्होंने मुझे आपके पति के ये जूते पहना कर यहॉ भेज दिया।"

वह भली स्त्री बेचारी तो पहले से ही बहुत दुखी थी और यह सुन कर तो और भी दुखी हो गयी।

हालॉकि उसके पति ने इसके बच्चों को मार डाला था फिर भी उसने उसको बचाने के लिये घर में जितना भी सोना चॉदी और कीमती सामान था सब उस छोटे अॅगूठे को दे दिया और वह छोटा अॅगूठा भी उस सब सामान को ले कर वहॉ से चला गया।

वह सब सामान ले कर छोटा अॅगूठा अपने घर पहुॅचा जहॉ उसके माता पिता उसको इतने सारे पैसे के साथ देख कर बहुत खुश हुए।

बहुत सारे लोग हैं जो इस बात को नहीं मानते कि छोटे अँगूठे ने ओगरे को कभी लूटा। उनका कहना है कि छोटा अँगूठा वहाँ से केवल सात लीग वाले जूते और अपना अच्छा दिल ले कर ही चला आया था क्योंकि उन सात लीग वाले जूतों को तो ओगरे केवल छोटे बच्चों का पीछा करने के लिये ही इस्तेमाल करता था और वे उसने उस ओगरे से ले ही लिये थे।

इस बात को मानने वालों का यह भी दावा है कि वे यह बात इसलिये कह सकते हैं कि उन्होंने कई बार उस लकड़हारे के घर में खाया पिया है। वह इतना अमीर भी नहीं था कि जिसको देख कर यह सोचा जा सके कि उसको कहीं से काफी पैसा मिल गया है।

इन लोगों का यह भी कहना है कि घर आ कर छोटे अँगूठे ने ओगरे के सात लीग वाले जूते निकाल दिये।

फिर वह शाही दरबार गया जहाँ किसी लड़ाई के नतीजे और किसी फौज के बारे में काफी बहस हो रही थी जो वहाँ से दो सौ लीग दूर थी।

वह राजा के पास गया और उससे कहा कि अगर वह चाहे तो रात होने से पहले पहले वह वहाँ जा कर उस फौज की खबर ला सकता है।

राजा ने खुश हो कर कहा कि अगर वह ऐसा कर सका तो वह उसको मालामाल कर देगा। छोटे अँगूठे ने अपनी बात रखी और उस फौज की खबर ले कर रात होने से पहले पहले ही लौट आया।

उसके इस पहले काम ने उसको बहुत मशहूर कर दिया और फिर वह अपने कामों की अपनी कीमत मॉगने लगा।

राजा के हुकुम को फौज तक पहुॅचाने के लिये न केवल राजा ने ही उसको मनमाना पैसा दिया बल्कि शाही दरबार की कुलीन स्त्रियों ने भी उसको अपने पति और प्रेमियों की खबरें लाने के लिये बहुत पैसा दिया।

कभी कभी वे कुलीन पत्नी स्त्रियॉ उसको अपनी चिट्ठियॉ लाने ले जाने के लिये भी कहती थीं पर इस काम के लिये वे उसको बहुत कम पैसा देती थीं। इतने कम पैसे का तो वह कोई हिसाब भी नहीं रखता था।

इस तरीके से सन्देशवाहक का काम करने के बाद वह फिर अपने पिता के पास चला गया। उसका पिता उसको देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने सारे परिवार को बहुत सुखी बना दिया था। अब सब लोग उसको बहुत प्यार करते थे और उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

ज़्यादा बच्चों का होना कोई बुरी बात नहीं है अगर वे सुन्दर, ताकतवर और अक्लमन्द हों तो। ज़्यादातर ऐसा देखा गया है कि सबसे छोटा वाला बच्चा परिवार के लिये अच्छी किस्मत ले कर आता है।

4 छोटा पौसेट[16]

हैन्सैल और गैटैल जैसी कहानियों की इस पुस्तक में हमने यह कहानी तुम्हारे लिये ब्रिटेन की कहानियों से ली है। यह कहानी इससे पहले की कहानी थम्ब जैसी ही है पर ब्रिटेन में यह इस तरह से कही सुनी जाती है।

बहुत समय पुरानी बात है कि ब्रिटेन में एक पति पत्नी अपने सात लड़कों के साथ किसी जंगल के पास रहते थे। वे लकड़ियॉ इकट्ठी करके बाजार में बेचते और उसी से अपना और अपने बच्चों का गुजारा करते।

उनका सबसे बड़ा लड़का दस साल का था और सबसे छोटा सात साल का। सारे लोग आश्चर्य करते कि इतने कम समय में उनके इतने ज़्यादा बच्चे कैसे हो गये पर यह ऐसे हुआ कि उसके ये बच्चे जुड़वॉ थे।

ये लोग बहुत गरीब थे और इन लोगों से अपने बच्चों का पालन ठीक से नहीं हो पा रहा था। पर अगर उनको सबसे ज़्यादा चिन्ता थी तो अपने सबसे छोटे बेटे की क्योंकि वह बहुत ही नाजुक और शान्त स्वभाव का था।

[16] Little Paucett – a folktale of United Kingdom, Europe.
[This story is like “Thumb” told and heard in France.]

जब वह पैदा हुआ था तब वह केवल अॅगूठे के बराबर था सो उन्होंने उसका नाम छोटा पौसेट[17] रख दिया था जिसका मतलब होता है "छोटा अॅगूठा"।

हर समय लोग बेचारे छोटे पौसेट पर हॅसते रहते पर उसको इस बात की कोई परवाह नहीं थी। वह था बहुत अक्लमन्द। वह सोचता ज़्यादा था और बोलता कम था।

एक साल बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। पति पत्नी बहुत घबराये और अपने बच्चों से छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोचने लगे।

एक रात की बात है कि लकड़हारा अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठा था और बच्चे सो गये थे। वह लकड़हारा बड़े दुख के साथ बोला — "मैरी[18], देखो, हम अब अपने बच्चों को अपने साथ नहीं रख सकते क्योंकि मैं उनको अपने सामने भूखे मरते नहीं देख सकता।

मैं इन्हें कल जंगल में छोड़ आऊॅगा और यह काम बड़ी आसानी से हो सकता है। जब ये लोग लकड़ी के गट्ठर बॉधने में लगे होंगे तब हम लोग इनको वहीं छोड़ कर घर चले आयेंगे।"

यह सुन कर पत्नी की ऑखों में ऑसू आ गये। वह रोती हुई बोली — "धीरज रखो निकोलस[19], अभी इन्हें अपने साथ ही रखो।

[17] Little Paucett

[18] Mary – name of the wife of the woodcutter

[19] Nicholas – name of the woodcutter

तुम्हारा दिल इन प्यारे प्यारे बच्चों को जंगल में अकेला छोड़ने को कैसे करता है?"

निकोलस ने समझाया कि वह अपनी गरीबी की वजह से उनको अपने साथ नहीं रख सकता था वरना बच्चों को तो वह भी बहुत प्यार करता था। फिर यह सोच कर कि वह उनको अपने सामने भूखों मरते नहीं देख पायेगी मैरी भी इस बात पर राजी हो गयी।

छोटे पौसेट ने अपने माता पिता की ये बातें कुछ सुनी कुछ नहीं सुनी परन्तु वह यह समझ गया कि कल कुछ होने वाला है। माता पिता के सोने के बाद वह चुपके से उठा और पास की नदी के किनारे से कुछ छोटे छोटे पत्थर बीन लाया और आ कर सो गया।

छोटे पौसेट ने रात वाली घटना किसी को नहीं बतायी। सुबह को वे सभी लोग लकड़ी लाने जंगल गये। जब वे लोग जंगल जा रहे थे तो छोटा पौसेट रास्ते में वे नदी से उठाये हुए पत्थर कुछ कुछ दूरी पर डालता गया।

चलते चलते वे लोग इतने घने जंगल में पहुॅच गये कि जहॉ पर दस फुट की दूरी पर भी कोई किसी को नहीं देख सकता था।

लकड़हारे ने लकड़ियॉ काटनी शुरू कीं और बच्चों ने उनके गट्ठर बॉधने शुरू किये। माता पिता ने देखा कि बच्चे लकड़ियों के गट्ठर बॉधने में लगे हैं सो वे उनको वहीं छोड़ कर टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर घर चले आये।

कुछ देर बाद बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता का तो कहीं पता ही नहीं है। छोटे पौसेट को छोड़ कर सभी बच्चों ने रोना शरू कर दिया।

छोटे पौसेट ने अपने सब भाइयों को चुप कराया और बोला — "डरो नहीं, हमारे माता पिता हमें यहॉ छोड़ कर चले गये हैं मगर मैं तुम सबको घर वापस ले जाऊॅगा। आओ, मेरे पीछे पीछे आओ।"

क्योंकि वह जानता था कि उन पत्थरों के सहारे वह अपने घर का रास्ता ढूॅढ लेगा।

सो उसके सब भाई उसके पीछे पीछे चलते चलते उन पत्थरों के सहारे अपने घर वापस आ गये। परन्तु वे डर के मारे घर के अन्दर नहीं घुसे, घर के बाहर ही बैठे रहे।

लकड़हारा और उसकी पत्नी जैसे ही घर लौटे गॉव के मुखिया ने उन्हें दस सोने के सिक्के भिजवाये जो उसने कभी उन लोगों से उधार लिये थे। पर वे लोग क्योंकि उसको बिल्कुल ही भूल चुके थे इसलिये वे उस धन को देख कर बहुत खुश हुए।

लकड़हारे ने अपनी पत्नी को तुरन्त ही गोश्त की दूकान पर भेजा क्योंकि उन्होंने बहुत दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया था। उसकी पत्नी अपनी जरूरत से तीन गुना अधिक गोश्त ले आयी और उसे पकाया।

खाने के बाद पत्नी बोली — "काश, इस समय मेरे बच्चे यहॉ होते। पता नहीं मेरे बच्चे इस समय उस घने जंगल में कहॉ भटक

रहे होंगे। कहीं उन्हें भेड़िया न खा गया हो। तुमने कितनी बेरहमी से मेरे बच्चों को जंगल में छोड़ दिया।"

यह बात वह बार बार कहती रही। आखिर लकड़हारे को गुस्सा आ गया तो उसने उसे पीटने की धमकी दी।

यह बात नहीं थी कि लकड़हारे को अपने बच्चों से प्यार नहीं था या अपने बच्चों को जंगल में छोड़ने का दुख नहीं था बल्कि यह बात उसे कुछ ज़्यादा ही खल रही थी कि पत्नी इस बात के लिये केवल उसी को जिम्मेदार ठहरा रही थी। अन्त में वह एक बार ज़ोर से यह कह कर चुप हो गयी "मेरे बच्चों तुम कहॉ हो?"

यह सुन कर दरवाजे पर बैठे सभी बच्चों ने रोना शुरू कर दिया — "हम यहॉ हैं मॉ, हम यहॉ हैं।"

पत्नी अपने बच्चों की आवाज सुन कर बहुत ही खुश हुई और दौड़ी दौड़ी दरवाजे तक जा कर दरवाजा खोला तो हर बच्चे को पुचकार कर खुशी से रो पड़ी।

फिर उसने अपने सब बच्चों को खाना खिलाया। सब बच्चों ने पेट भर कर खाना खाया और फिर सबने एक साथ बताया कि वे सब जंगल में कितना डर गये थे। माता पिता को बड़ी खुशी हुई कि उनके बच्चे वापस आ गये थे।

और यह खुशी तब तक चली जब तक वे सोने के सिक्के चले। परन्तु जैसे ही वह धन खत्म हो गया तो वे फिर परेशान हो

गये। अबकी बार उन्होंने बच्चों को और ज़्यादा घने जंगल में छोड़ने का विचार किया।

यह बात भी छोटे पौसेट ने सुन ली। उसने इस समस्या को पहले की तरह ही सुलझाने का निश्चय किया पर इस बार ऐसा न हो सका। क्योंकि अबकी बार जब वह रात को उठा तो घर का दरवाजा बन्द था सो वह बेचारा चुपचाप आ कर सो गया।

सुबह मॉ ने जब नाश्ते के लिये सब बच्चों को रोटी दी तो छोटे पौसेट को लगा कि वह इस रोटी से वह काम कर सकता था जो उसने पत्थरों से किया था।

तो सुबह सब बड़े बच्चों ने तो अपनी रोटी खा ली पर छोटे पौसेट ने अपनी रोटी बचा ली। जब वे सब जंगल गये तो वह अपनी रोटी के छोटे छोटे टुकड़े रास्ते में गिराता गया।

अबकी बार उनके माता पिता उनको और भी ज़्यादा घने जंगल में ले गये। पिछली बार की तरह जब बच्चे लकड़ियों के गट्ठर बॉध रहे थे तो उनके माता पिता उनको जंगल में छोड़ कर घर चले आये।

जब बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता का कहीं अता पता नहीं है तो वे फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

छोटे पौसेट ने उनको फिर समझाया कि वह आते समय रोटी के टुकड़े गिराता आया था सो वे लोग उसी के सहारे फिर से घर वापस

जा सकते हैं। पर जब छोटे पौसेट ने उन रोटी के टुकड़ों को ढूँढना शुरू किया तो उसे तो रोटी का एक भी टुकड़ा दिखायी नहीं दिया।

उन टुकड़ों को तो चिड़ियॉ खा गयी थीं। अब वे बड़ी कठिनाई में पड़े क्योंकि जितना ज़्यादा वे रास्ते की खोज में इधर उधर घूमते रहे उतना ही ज़्यादा वे जंगल में भटकते जा रहे थे।

अँधेरा होना शुरू हो गया था, तेज़ हवा भी चलने लगी थी और जंगली जानवरों की आवाजें जंगल को और भयानक बना रही थीं।

डर के मारे वे सब एक साथ बिना हिले डुले एक जगह पर बैठे हुए थे। इतने में बारिश भी होने लगी तो वे सबके सब भीग गये और डर और ठंड दोनों से कॉपने लगे।

फिर उन्होंने वहॉ से चलने का निश्चय किया। अँधेरी रात में बारिश के बाद वे जंगल में फिसलते फिसलते बच रहे थे। कभी उनका पैर गड्ढे में पड़ता तो कभी कॉटेदार झाड़ियों पर।

छोटा पौसेट बोला — "रुको भाइयो, मैं ज़रा देख लूँ अगर मुझे कहीं कुछ नजर आ जाये तो।"

कह कर वह एक पेड़ पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा। दूर कहीं उसको एक झिलमिलाती रोशनी दिखायी दी तो वह खुशी से नीचे उतर आया और अपने सभी भाइयों को उधर की तरफ ले चला।

काफी दूर जाने के बाद वे एक घर के पास आ गये। उन्होंने दरवाजा खटखटाया तो एक भली सी औरत ने दरवाजा खोला और

उन बच्चों को अकेला देख कर पूछा — "अरे, इतनी रात में तुम लोग यहॉ कैसे? और यहॉ तुम कर क्या रहे हो? और क्या चाहते हो?"

छोटा पौसेट बोला — "हम लोग गरीब बच्चे हैं और जंगल में रास्ता भूल गये हैं। इस समय रात में ठहरने की जगह चाहते हैं।"

उस औरत ने देखा कि बच्चे बहुत ही सुन्दर और नेक हैं तो वह रोने लगी। फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे बच्चो, तुम यहॉ क्यों आये? यहॉ तो एक राक्षस रहता है जो छोटे छोटे बच्चों को खा जाता है।"

छोटा पौसेट बोला — "मॉ, जंगल में भी क्या भरोसा है कि हमको भेड़िया नहीं खा जायेगा। अच्छा है अगर हमें राक्षस ही खा जाये और यह भी तो हो सकता है कि वह हमें दया करके छोड़ ही दे।"

इस समय सभी भाई भीगे थे और ठंड से कॉप रहे थे। उनको इस हालत में देख कर उस औरत ने उन सबको अन्दर बुला लिया और रसोई में आग के पास बिठा दिया।

वहॉ उन लोगों को थोड़ा सा आराम मिला। उस आग पर राक्षस के खाने के लिये एक पूरी भेड़ भुन रही थी।

कुछ ही देर बाद राक्षस के भारी कदमों की आवाज सुनायी दी तो उस औरत ने बच्चों को पलंग के नीचे छिपा दिया और दरवाजा खोलने चली गयी।

राक्षस ने आ कर पूछा "खाना तैयार है?" और मेज पर बैठ गया। भेड़ अभी तक कच्ची थी परन्तु राक्षस को वही अच्छी लगी।

फिर उसने अपने बॉयी ओर को कुछ सूँघा और बोला — "मुझे आज यहॉ से आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

वह औरत बोली — "यह उस बछड़े की खुशबू होगी जो मैंने अभी अभी काटा और साफ किया है।"

"मैं फिर कहता हूँ कि मुझे आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है बछड़े की नहीं और तू कुछ सुन ही नहीं रही। यहॉ कुछ जरूर है।"

यह कह कर राक्षस अपनी मेज से उठा और सीधा पलंग के पास गया और उसके नीचे देखा तो उसको उस पलंग के नीचे सात बच्चे दिखायी दिये।

वह खुश हो कर बोला — "आहा, अब मुझे पता चला कि तू मुझे किस तरह धोखा देती है। चलो अच्छा हुआ ये बच्चे यहॉ हैं। एक दो दिन में मेरे यहॉ तीन राक्षस आने वाले हैं ये बच्चे उनके लिये अच्छा खाना है।"

गरीब बच्चे उस राक्षस के पैरों पर गिर कर अपनी जान की भीख मॉगने लगे। मगर उनके सामने तो एक कठोर राक्षस खड़ा था

जिसके दिल में दया का नाम तक न था। वह राक्षस एक चाकू ले आया और उसे एक पत्थर पर घिस कर तेज़ करने लगा।

फिर उसने उन बच्चों में से एक बच्चे को पकड़ा और उसे मारने ही वाला था कि उसकी पत्नी बोली — "इसको अभी मारने की क्या जरूरत है कल तक इन्तजार करो क्योंकि अभी हमारे पास एक बछड़ा और दो भेड़ें और हैं।"

"ठीक है, ठीक है। इनको पेट भर कर खाना खिलाओ और सुला दो।" यह कह कर राक्षस चला गया।

वह औरत यह सुन कर बहुत खुश हुई कि कम से कम इस समय तो उसने बच्चे को बचा लिया। उसने उन बच्चों को खूब अच्छा खाना खिलाया पर वे बच्चे इतने डरे हुए थे कि वे बेचारे ठीक से खाना भी न खा सके।

राक्षस फिर से शराब पीने बैठ गया। वह बहुत खुश था कि वह अब अपने मेहमानों की खातिरदारी अच्छी तरह से कर सकेगा। उसने दर्जनों गिलास शराब पी पी कर खाली कर दिये थे। फिर वह सोने चला गया।

इस राक्षस के सात लड़कियॉ थीं। वे सभी खूब गोरी और सुन्दर थीं क्योंकि उनको रोज ताजा मॉस खाने को मिलता था।

उनकी भूरी ऑखें बिल्कुल गोल थीं मुड़ी हुई नाक थी, बड़े बड़े मुँह थे और उनके बहुत तेज़ दॉत थे। वे बहुत जल्दी सो जाती

थीं। वे सब एक ही पलंग पर सोतीं थीं और हमेशा उनके सिरों पर ताज रखा रहता था।

उन्हीं के कमरे में एक और बड़ा सा पलंग पड़ा हुआ था सो उस औरत ने उन सातों लड़कों को उस पलंग पर सुला दिया और फिर खुद भी सोने चली गयी।

छोटा पौसेट यह सब देख रहा था और सोच रहा था कि वह उस राक्षस से जरूर बदला लेगा। वह उठा और उसने राक्षस की लड़कियों के ताज उठा कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर रख लिये और अपनी टोपियाँ राक्षस की लड़कियों को पहना दीं। ऐसा उसने इसलिये किया ताकि राक्षस धोखा खा जाये।

उसका यह सोचना ठीक था क्योंकि थोड़ी ही देर बाद राक्षस वहाँ आया। वह पहले लड़कों के बिस्तर की तरफ गया जहाँ छोटे पौसेट के सिवा सभी गहरी नींद सो रहे थे।

वहाँ उसने सोने के ताज देखे तो सोचा कि "शायद मैं रात को ज़्यादा पी गया था। वे बच्चे दूसरे पलंग पर सो रहे हैं।"

ऐसा सोच कर वह दूसरे पलंग के पास गया और वहाँ टोपियाँ देखीं तो सोचा — "हाँ अब मैं ठीक जगह पर आया हूँ। यहीं वे लड़के सो रहे हैं।" और तुरन्त ही उसने अपनी सातों लड़कियों का गला काट दिया और जा कर सो गया।

इधर पौसेट ने जैसे ही राक्षस के खर्राटों की आवाज सुनी। वह खुद उठा, उसने अपने भाइयों को उठाया और फिर वे सब धीरे से

बगीचे की तरफ चले गये। रात भर वे भागते रहे। उनको यह ही नहीं पता था कि वे किस रास्ते पर जा रहे हैं।

सुबह जब राक्षस जागा तो अपनी पत्नी से बोला — "जाओ, कल रात जो बच्चे आये थे उन्हें तैयार करो।"

राक्षस की पत्नी बड़ी खुश हुई कि कम से कम अभी तक वे लड़के ज़िन्दा थे पर उसे आश्चर्य भी कम नहीं हुआ कि आज उसका पति बच्चों के प्रति इतना भला कैसे हो गया। उसको तो सपने में भी ख्याल नहीं था कि राक्षस के "तैयार करो" का क्या मतलब है।

वह तुरन्त दौड़ी दौड़ी कमरे में गयी और पछाड़ खा कर गिर पड़ी क्योंकि वहॉ तो उसके अपने बच्चे मरे पड़े थे।

उधर राक्षस गुस्सा हो रहा था कि उसकी पत्नी उन बच्चों को लाने में इतनी देर क्यों लगा रही थी सो वह भी उसकी सहायता के लिये उसके पास पहुॅचा। पर वहॉ पहुॅच कर वह भी अपनी पत्नी की तरह ही हक्का बक्का रह गया।

"ओह यह मैंने क्या किया। इसका बदला तो उन लड़कों को चुकाना ही पड़ेगा।" कहते हुए राक्षस ठंडा पानी ला कर अपनी पत्नी को होश में लाने की कोशिश करने लगा।

उसे होश में ला कर उसने उससे अपने जादुई जूते मॉगे ताकि जल्दी ही दौड़ कर वह उन लड़कों को पकड़ सके। उसकी पत्नी ने उसको उसके जादुई जूते

ला दिये और वह उनको पहन कर उड़ चला और उसी जगह आ पहुॅचा जहॉ बच्चे छिपे हुए थे।

बच्चों ने राक्षस को देख लिया था जो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर अपना पैर रखता चला जा रहा था। छोटे पौसेट को एक गुफा दिखायी दे गयी सो वे सब उस गुफा में घुस गये।

राक्षस भी उनको ढूॅढते ढूॅढते थक गया था सो वह भी उसी चट्टान पर आराम करने के लिये बैठ गया जिस पहाड़ की गुफा में बच्चे छिपे हुए थे। थके होने की वजह से वह वहीं सो गया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा।

छोटा पौसेट अपने भाइयों से बोला कि अब उनको घर वापस चले जाना चाहिये क्योंकि वहॉ से उनका घर बहुत पास था और वे उसकी चिन्ता न करें वह अपने आप आ जायेगा। सो वे तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गये।

इधर छोटा पौसेट ऊपर पहाड़ी पर आया और उसने धीरे से राक्षस के जादुई जूते उसके पैरों से खींच लिये। वे जूते पौसेट के लिये बहुत बड़े थे परन्तु क्योंकि वे जूते जादू के थे इसलिये वे उसके पैरों में ठीक आ गये।

वह उन जूतों को पहन कर राक्षस के घर गया जहॉ उसने उस की पत्नी को रोते देखा। वह बेचारी अपने बच्चों के मर जाने पर बहुत दुखी थी और रो रही थी।

छोटा पौसेट उससे बोला कि राक्षस बहुत बड़े खतरे में है क्योंकि उसे चोरों के एक बहुत बड़े गिरोह ने पकड़ लिया है और वे उसे मारने वाले हैं।

अगर वह अपने पास से सारा सोना चॉदी दे दे तो वह बच सकता है इसी लिये उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और सबूत के तौर पर उसने अपने जूते उसको पहना दिये हैं।

यह सुन कर वह भली औरत बहुत डर गयी सो उसने सब कुछ निकाल कर पौसेट को दे दिया।

राक्षस का सारा सोना चॉदी ले कर पौसेट अपने घर आ गया। उसके माता पिता उसको देख कर बहुत खुश हुए और फिर वे सब उस राक्षस के धन से बहुत दिनों तक आराम से रहे।

एक कहानी कई रंग की सीरीज़ में

1 बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ
2 टाम थम्ब जैसी कहानियॉ
3 छह हंस जैसी कहानियॉ
4 तीन सन्तरे जैसी कहानियॉ
5 स्नो व्हाइट जैसी कहानियॉ
6 सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियॉ
7–1 सूअर राजा जैसी कहानियॉ**–1**
7–2 सूअर राजा जैसी कहानियॉ**–2**
8 जूते पहने बिल्ला जैसी कहानियॉ
9 हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियॉ
10 रैड राइडिंग हुड जैसी कहानियॉ
11–1 सिन्डरैला जैसी कहानियॉ — यूरोप में**–1**
11–2 सिन्डरैला जैसी कहानियॉ — यूरोप में**–2**
12 दुनियॉ में कितनी सिन्डरैला
13 रम्पिलटिल्टस्किन जैसी कहानियॉ
14 अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ
15 मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**